


THE SUPER POWER CHOICE



रवि एक छोटे से गाँव का लड़का था, लेकिन
उसके सपने बड़े थे। उसका मन हमेशा
कहानियों और कॉमिक्स में खोया रहता था—
स्पाइडरमैन, सुपरमैन, और आयरनमैन जैसे
हीरो उसके आदर्श थे। लेकिन एक सवाल उसके
दिमाग में बार-बार आता था:
“अगर मुझे सुपरपावर मिल जाए, तो मैं क्या
करूँगा?”



एक दिन, स्कूल के डिबेट प्रतियोगिता में टीचर ने
वही सवाल पूछा:

“अगर तुम्हारे पास कोई भी सुपरपावर हो, तो
वह क्या होगी और तुम उससे क्या करोगे?”

सभी क्लासमेट्स ने अपने-अपने अनोखे जवाब
दिए। कोई बोला, “मैं दुनिया का सबसे ताकतवर
इंसान बन जाऊँगा!” कोई और बोला, “मैं पैसा
बनाने की सुपरपावर लूँगा।” लेकिन रवि उलझन
में था। उसके मन में कुछ अलग सा चल रहा था।

सपना और रहस्यमयी पात्र

उस रात रवि ने एक अजीब सपना देखा। उसके सामने एक रहस्यमयी पात्र प्रकट हुआ—न इंसान, न एलियन।

उसने रवि से पूछा:

“मैं तुम्हें एक सुपरपावर दे सकता हूँ। तुम्हें क्या चाहिए?”

रवि सोचने लगा। उड़ने की शक्ति? समय यात्रा? अदृश्य होने की शक्ति? फिर उसने कुछ अलग सोचा और कहा:
“मुझे लोगों के दुख और समस्याओं को समझने की शक्ति चाहिए।”

वह पात्र चौंक गया। उसने पूछा,
“क्यों? दुनिया में इतनी स्वार्थी चीज़ें छोड़कर तुम ये क्यों चाहते हो?”

रवि बोला:

“मुझे लगता है, अगर मैं लोगों के दुख को समझ सकता हूँ, तो मैं उन्हें बेहतर मदद कर पाऊँगा। समस्या को सुलझाने के लिए उसे समझना ज़रूरी है।”



और बस, उस रात रवि एक अनोखी
सुपरपावर के साथ उठा—हमदर्दी
की शक्ति। अब रवि किसी भी
इंसान के पास जाकर उसके अंदर
के जज्बात, उसके दुख, और उसके
सपने समझ सकता था। यह
सुपरपावर रवि के लिए एक
ज़िम्मेदारी बन गई।

पहला इंसान जिससे रवि मिला, वह एक चाय बेचने वाला था, जो सड़क के किनारे छोटी सी दुकान चलाता था। रवि ने देखा, वह हमेशा मुस्कुराते हुए चाय बेचता था, लेकिन अंदर से वह दुखी था। रवि ने पूछा,
“अंकल, कोई परेशानी है?”

चाय वाले अंकल बोले:
“बेटा, परेशानी तो है, लेकिन इसके बारे में तुम क्या करोगे?”

रवि ने अपनी शक्ति का इस्तेमाल किया और समझा कि अंकल का बेटा पढ़ाई छोड़कर काम कर रहा है क्योंकि घर में पैसे नहीं हैं। रवि ने उनकी मदद करने की ठानी। उसने अपने स्कूल के प्रिंसिपल से बात की और अंकल के बेटे के लिए एक स्कॉलरशिप का इंतजाम किया। यह छोटी सी मदद अंकल की ज़िंदगी बदल गई।



रवि हर रोज़ नए लोगों से मिलता और उनकी समस्याएँ सुलझाता। किसी के लिए नौकरी ढूँढता, किसी के सपने पूरे करता। धीरे-धीरे, उसने समझ लिया कि असली हीरो बनने के लिए ताकतवर या अमीर होना ज़रूरी नहीं है।

समझ और मदद का जज्बा ही असली सुपरपावर है।

एक दिन, रवि एक बड़े सम्मेलन में पहुँचा,
जहाँ देश के बड़े-बड़े नेता और सीईओ अपनी
बातें रख रहे थे। रवि को भी बुलाया गया था
क्योंकि उसकी हमदर्दी की कहानी वायरल हो
चुकी थी। जब उससे पूछा गया:
“रवि, अगर तुमसे फिर से पूछा जाए कि एक
और सुपरपावर चाहिए तो क्या लोगे?”

रवि मुस्कुराया और बोला:
“मैं अपनी वाली ही नहीं छोड़ूँगा। लेकिन अगर
कुछ और मिल सके, तो मैं यह सुपरपावर
सबको देना चाहूँगा।”



सब लोग हैरान रह गए। रवि ने समझाया:
“अगर हर इंसान हमदर्दी के साथ जीना शुरू
कर दे, तो दुनिया में न तो जंग होगी, न भूख,
और न ही दुख। हर इंसान अपनी स्वार्थी सोच
को छोड़कर दूसरों के बारे में सोचना शुरू
करेगा।”

ऑडियंस खड़े होकर तालियाँ बजाने लगी।
रवि के साधारण शब्दों में एक बड़ी बात छुपी
थी:

“सुपरपावर सिफ्र कॉमिक्स में नहीं होते। जो
इंसान दूसरों के दुख को समझकर मदद करे,
वही असली सुपरहीरो होता है।”



इस कहानी से हमें ये सिखने को मिलता है:

1. सुपरपावर सिफ्ट शारीरिक या काल्पनिक

नहीं होते।

2. असली जीवन की सुपरपावर, जैसे
हमदर्दी, समस्या सुलझाने की क्षमता और
मदद करने का स्वभाव, सबसे ज्यादा

प्रभावशाली होती हैं।

3. हर इंसान के अंदर एक हीरो छुपा होता है।
सवाल यह है: क्या आप उसे जगा सकते हो?